दिनांक : .०१.२०१९

प्रति,

माननीय प्रधानमंत्री,
भारत सरकार, १५२ बी, साऊथ ब्लाक,
रायसिना हिल, नई देहली – ११००११

विषय : सुसंस्कारित भावी पीढी तैयार करने के लिए विद्यालय–महाविद्यालयों में हिन्दू विद्यार्थियों को हिन्दू धर्म की शिक्षा मिलने के संदर्भ में...

महोदय,

भारतवर्ष का इतिहास देखें, तो हमारे यहां वेद, उपनिषद, श्रृति, स्मृति, पुराण इत्यादि अनेक धर्मग्रंथ हिन्दू धर्म का तत्त्वज्ञान बतानेवाले हैं । इतने बडे प्रमाण में और विविधांगी विषयों पर धर्म का तत्त्वज्ञान संसार के अन्य किसी भी पंथियों के धर्मग्रंथों में नहीं है । किंबहुना अन्य पंथियों के बहुत हुए तो एक–दो धर्मग्रंथ मान्यताप्राप्त हैं । हिन्दू धर्म के तत्त्वज्ञान की व्याप्ति इतनी अधिक है कि वह एक ग्रंथ में समाना संभव ही नहीं है । यही हमारी महानता है । आज यही ग्रंथ विश्वकल्याण और विश्वशांति के लिए खरे अर्थों में मार्गदर्शक होने का जगन्मान्य है । इसलिए जगभर के विविध विद्यापीठ और विद्यालयों में इन महान ग्रंथों का अध्ययन कर जीवन सुसंस्कारित, सुखी और आनंदमय होने में सहायता हो रही है । वर्तमान में समाज में उत्पन्न हुई विविध प्रकार की समस्याओं से खरे अर्थों में संसार को तार सके, ऐसा ज्ञान इन धर्मग्रंथों में होने का अनेक विद्वान शास्त्रज्ञों ने बताया है; परंतु ऐसा होते हुए भी भारत में बहुसंख्य हिन्दू विद्यार्थियों को विद्यालय–महाविद्यालयों में हिन्दुओं के धर्मग्रंथों की सीख कहीं भी नहीं दी जाती है ।

*** इस संदर्भ में कुछ सूत्रे आपके निदर्शन में लाना चाहते हैं –**

१. भारत धर्मनिरपेक्ष देश है; तो भी मदरसों में कुरान पढाया जाता है, ईसाई मिशनरियों के कोन्वेंट शालाओं में बायबल पढाया जाता है और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दू विद्यार्थी जिन पाठशालाओं में पढते हैं, वहां धार्मिक शिक्षा पर रोक लगाई जाती है ।

२. अनेक अल्पसंख्यांकों के पाठशालाओं को सरकारी अनुदान मिलता है । धर्मनिरपेक्ष तत्त्व पर चलनेवाली सरकार धर्माधारित शिक्षा संस्थाओं को अनुदान देती है । हिन्दू धर्मियों को अनुदान तो छोडो, धर्मशिक्षा देने की सुविधा भी नहीं दी जाती ।

३. हिन्दुओं के धर्मग्रंथों का ज्ञान केवल हिन्दुओं के लिए सीमित न होकर सभी जाति–धर्म के लोगों को व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही स्तर पर सर्वांगीण विकास करवानेवाला है । इसलिए ही अमेरिका जैसे अत्यंत प्रगत और विकासित देश के बिजनेस मेनेजमेंट के विद्यार्थियों को भगवद्गीता का विषय अनिवार्य किया गया है ।

४. मध्यप्रदेश में पाठशालाओं में भी सरकार ने 'भगवद्गीता' विषय सीखाने का निर्णय लिया है । इस संदर्भ में मध्यप्रदेश के उच्च न्यायालय ने 'भगवद्गीता' केवल धर्मग्रंथ न होकर जीवन जीने का उत्तम तत्त्वज्ञान है । इसलिए उसे पढाने में आपत्ति नहीं है, ऐसा कहते हुए उसे पढाने की अनुमति दी है ।

५. जम्मू–कश्मीर प्रशासन ने २२ अक्टूबर २०१४ को पाठशाला, महाविद्यालय और राज्य के ग्रंथालयों में 'रामायण' और 'भगवद्गीता' की उर्दू प्रतियों का वितरण करने का आदेश दिया है ।

६. महाराष्ट्र में तनाव नियंत्रण के लिए पाठशालाओं में बौद्ध धर्म के अनुसार 'विपश्यना' सीखाई जाती है ।

७. 'भगवद्गीता' और हिन्दू धर्म के अन्य धर्मग्रंथों में दिया गया ज्ञान मनुष्य को शाश्वत चैतन्य प्राप्त करवानेवाला तथा संजीवनी समान ही है । कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग इत्यादि योगमार्गों का स्वीकार कर आदर्श और समृद्ध जीवन जीकर जीवन का सार्थक कैसे करें, इसकी सीख 'भगवद्गीता' देती है । भगवद्गीता की घूटी पीने से भावी पीढी, समाज इतना ही नहीं प्रशासन भी आदर्श बनेगा ।

८. भगवद्गीता का तत्त्वज्ञान संपूर्ण मानवजाति के उद्धार का है तथा उसका मोल आज विश्व के अनेक देशों को ज्ञात हुआ है; इसलिए ही कुछ पाठशाला तथा महाविद्यालयों में भगवद्गीता का तत्त्वज्ञान (बिनाविरोध स्वीकारें) सीखाने की मान्यता दी जाती है । अन्य धर्मीय होने पर भी उनका 'भगवद्गीता' सीखने का प्रयास स्तुत्य है ।

९. मानवी जीवन समृद्ध करनेवाले भारतीयों के इस महान ग्रंथ का मोल जानकर देश-विदेश के बुद्धजीवी, विचारक और अभ्यासक उसका अभ्यास कर मानवी जीवन समृद्ध कर रहे हैं । इसके कुछ उदाहरण यहां दे रहे हैं ।

अ. अमेरिका में 'सेटोन हॉल युनिवर्सिटी' में पढने आनेवाले प्रत्येक विद्यार्थी को श्रीमद् भगवद्गीता सीखना अनिवार्य किया है ।

आ. अमेरिका के हावर्ड विद्यापीठ में संस्कृत भाषा सीखाई जाती है, क्योंकि अनेक धर्मग्रंथों का अध्ययन करने के लिए संस्कृत भाषा आना आवश्यक है । वहां मेनेजमेंट विषय के लिए श्रीमद् भगवद्गीता का विशेष अभ्यास किया जाता है ।

इ. संस्कृत भाषा के धर्मग्रंथों के तत्त्वज्ञान का अभ्यास करने के लिए जर्मनी के १४ प्रमुख विद्यापीठों में संस्कृत भाषा सीखाई जाती है ।

ई. 'द साऊथ एशिया इंन्स्टिट्युट' और 'युनिवर्सिटी ऑफ हेडलबर्ग' के माध्यम से स्विट्झरलैंड और इटली में तत्त्वज्ञान का अभ्यास करने के लिए संस्कृत पढाया जाता है ।

उ. नेदरलैंड के विद्यालयों में ५ वीं के बच्चों को भगवद्गीता पढाई जाती है ।

ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे ।

१०. स्वतंत्रता के पश्चात ७० वर्षों में बहुसंख्य हिन्दुओं के देश में ही हिन्दुओं को धर्मशिक्षा की कोई भी व्यवस्था नहीं की गई है । इसलिए आज हिन्दू युवापीढी पाश्चात्त्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भोगवाद, व्यसनाधीनता, नीतिहीनता और वासनांधता के आधीन होकर वाममार्ग पर जा रही है । धर्मशिक्षा से नीतिमत्ता आती है, वर्तमान में वह न मिलने से समाज में चोरियां, खून, डाके, बलात्कार और भ्रष्टाचार इत्यादि जेसे अपराध बढे हैं । इसके पीछे भी धर्मशिक्षा का अभाव ही मुख्य कारण है ।

११. इसके साथ ही 'सिगना टीटीके हेल्थ इश्युरन्स' द्वारा किए गए सर्वेक्षण में ऐसा दिखाई दिया है कि देश के ८ भारतीयों में से एक को तनाव का सामना करना असंभव होता है । इससे देश के युवक और नागरिकों की तनाव की स्थिति स्पष्ट होती है । केवल तनाव नहीं व्यक्तिगत आणि सामाजिक जीवन सुखी होने के लिए, छोटे बच्चों पर सुसंस्कार होने के लिए रामायण, महाभारत इत्यादि धर्मग्रंथों की शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है ।

हिन्दुओं को उनके धर्मग्रंथों की शिक्षा पाठशाला में देने से देश की भावी पीढी सूज्ञ, संस्कारक्षम और चरित्रसंपन्न होगी । वही खरे अर्थों में मानव का विकास है । हम मांग करते हैं कि केंद्र सरकार हिन्दुओं को उनके धर्मग्रंथों की शिक्षा पाठशाला में देने का निर्णय लें और सभी पाठशाला-महाविद्यालयों में प्रतिदिन धर्मशिक्षा दी जाए ।

आपका विश्वसनीय,

(संपर्क :)